



# श्री गणपति अथर्वशीर्ष

हिन्दी अनुवाद सहित, आरती  
और पूजा विधि

# श्री गणपति अथर्वशीर्ष पूजा विधि

देवगणों में प्रथम पूज्य श्री गणेश संकटों को हर लेते हैं। विघ्नहर्ता गणेशजी की मंत्रों जाप से पूजा करने पर सर्व सिद्धि प्राप्त होती है। इसलिए गणपति जी का अथर्वशीर्ष स्त्रोत का पाठ करते हुए संपूर्ण सामग्री का प्रयोग करें।

इसमें सुगंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप व नैवेद्य अर्पण करें गणेश भगवान को प्रसन्न करने के लिए गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं। लाल व सिंदूरी रंग गणपति को प्रिय है लाल रंग के पुष्प से पूजन करें।



भगवान गणेश के नाम से ॐ गं गणपतये नमः मन्त्र को का जाप करते हुए विधिवत पूजन करें। भगवान श्री गणेश जी के अथर्वशीर्ष स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। इससे घर और जीवन के अमंगल दूर होते हैं।

# श्री गणपति अथर्वशीर्ष

।। 'श्री गणेशाय नमः' ।।

ॐ भद्रं कर्णेभि शृणुयाम देवाः ।

भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।।

स्थिरै रंगै स्तुष्टुवां सहस्तनुभिः ।

व्यशेम देवहितं यदायुः ।।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः ।

स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।

स्वस्ति न स्तार्क्ष्यो अरिष्ट नेमिः ।।

स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

ॐ शांतिः । शांतिः ।। शांतिः ।।।

ॐ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि ।।

त्वमेव केवलं कर्ताऽसि । त्वमेव केवलं धर्तासि ।।

त्वमेव केवलं हर्ताऽसि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि ।।

त्वं साक्षादत्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि ।। सत्यं वच्मि ।।

अव त्वं मां ।। अव वक्तारं ।। अव श्रोतारं । अवदातारं ।।

अव धातारम अवानूचानमवशिष्यं ।। अव पश्चात्तात् ।। अव पुरस्तात् ।।

अवोत्तरात्तात् ।। अव दक्षिणात्तात् ।। अव चोर्ध्वात्तात् ।।

अवाधरात्तात् ।। सर्वतो मां पाहिपाहि समन्तात् ।। 13 ।।

त्वं वाङ्मयचस्त्वं चिन्मय । त्वं वाङ्मयचस्त्वं ब्रह्ममयः ।।

त्वं सच्चिदानंदा द्वितियोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।

त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । 14 ।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति ।

सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति ।। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति ।।

त्वं भूमिरापोनलोऽनिलो नभः ।। त्वं चत्वारिवाक्पदानी ।। 15 ।।

त्वं गुणयत्रयातीतः त्वमवस्थात्रयातीतः ।





रदं च वरदं च हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम् ।।

रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् ।।

रक्तगंधाऽनुलिप्तागं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ।। ८ ।।

भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् ।।

आविर्भूतं च सृष्टयादौ प्रकृतैः पुरुषात्परम् ।।

एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनांवरः ।। ९ ।।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये ।। नमः प्रथमपत्तये ।।

नमस्तेऽस्तु लंबोदारायैकदंताय विघ्ननाशिने शिवसुताय ।

श्रीवरदमूर्तये नमोनमः ।। १० ।।

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते ।। सः ब्रह्मभूयाय कल्पते ।।

स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते सर्वतः सुखमेधते ।। ११ ।।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ।।

प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ।।

सायं प्रातः प्रयुंजानो पापोद्भवति । सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति ।।

धर्मार्थकाममोक्षं च विदंति ।। १२ ।।

इदमथर्वशीर्षम शिष्यायन देयम् ।।

यो यदि मोहाददास्यति स पापीयान भवति ।।

सहस्रावर्तनात् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् ।।13 ।।

अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति ।।

चतुर्थत्यां मनश्च जपति स विद्यावान् भवति ।।

इत्यथर्वण वाक्यं ।। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात् न विभेती

कदाचनेति ।।14 ।।

यो दूर्वा कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति ।।

यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति ।। सः मेधावान् भवति ।।

यो मोदक सहस्रैण यजति । स वाञ्छित फलम् वाप्नोति ।।

यः साज्य समिधर्भयजति, स सर्वं लभते स सर्वं लभते ।।15 ।।

अष्टो ब्राह्मणानां सम्यग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति ।।

सूर्य गृहे महानद्यां प्रतिभासंनिधौ वा जपत्वा सिद्ध मंत्रोन् भवति ।।

महाविघ्नात्प्रमुच्यते ।। महादोषात्प्रमुच्यते ।। महापापात् प्रमुच्यते ।

स सर्वं विद्भवति स सर्वं विद्भवति । य एवं वेद इत्युपनिषद् ।।16 ।।

# श्री गणपति अथर्वशीर्ष हिन्दी अनुवाद सहित

गणपति अथर्वशीर्ष ॐ नमस्ते गणपतये ।  
त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि त्वमेव केवलं कर्ताऽसि  
त्वमेव केवलं धर्ताऽसि त्वमेव केवलं हर्ताऽसि  
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि त्व साक्षादात्माऽसि नित्यम् ।। 1 ।।

अर्थ: ॐ कारापति भगवान गणपति को नमस्कार है। हे गणेश! तुम्हीं प्रत्यक्ष तत्व हो। तुम्हीं केवल कर्ता हो। तुम्हीं केवल धर्ता हो। तुम्हीं केवल हर्ता हो। निश्चयपूर्वक तुम्हीं इन सब रूपों में विराजमान ब्रह्म हो। तुम साक्षात नित्य आत्मस्वरूप हो।

ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि ।। 2 ।।

अर्थ: मैं ऋत न्याययुक्त बात कहता हूँ। सत्य कहता हूँ।

अव त्व मां । अव वक्तारं । अव श्रोतारं । अव दातारं ।  
अव धातारं । अवानूचानमव शिष्यं । अव पश्चात्तात । अव पुरस्तात ।  
अवोत्तरात्तात । अव दक्षिणात्तात् । अवचोर्ध्वात्तात् ।। अवाधरात्तात् ।।  
सर्वतो मां पाहि-पाहि समंतात् ।। 3 ।।

अर्थ: हे पार्वतीनंदन! तुम मेरी (मुझ शिष्य की) रक्षा करो। वक्ता (आचार्य) की रक्षा करो। श्रोता की रक्षा करो। दाता की रक्षा करो। धाता की रक्षा करो। व्याख्या करने वाले आचार्य की रक्षा करो। शिष्य की रक्षा करो। पश्चिम से रक्षा। पूर्व से रक्षा करो। उत्तर से रक्षा करो। दक्षिण से रक्षा करो। ऊपर से रक्षा करो। नीचे से रक्षा करो। सब ओर से मेरी रक्षा करो। चारों ओर से मेरी रक्षा करो।



**अर्थ:** तुम वाङ्मय हो, चिन्मय हो। तुम आनन्दमय हो। तुम ब्रह्ममय हो। तुम सच्चिदानन्द अद्वितीय हो। तुम प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। तुम दानमय विज्ञानमय हो।

**अर्थ:** यह जगत तुमसे उत्पन्न होता है। यह सारा जगत तुममें लय को प्राप्त होगा। इस सारे जगत की तुममें प्रतीति हो रही है। तुम भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश हो। परा, पश्चिमी, बैखरी और मध्यमा वाणी के ये विभाग तुम्हीं हो।

**अर्थ:** तुम सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो। तुम जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं से परे हो। तुम स्थूल, सूक्ष्म और वर्तमान तीनों देहों से परे हो। तुम भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों से परे हो। तुम मूलाधार चक्र में नित्य स्थित रहते हो। इच्छा, क्रिया और ज्ञान तीन प्रकार की शक्तियाँ तुम्हीं हो। तुम्हारा योगीजन नित्य ध्यान करते हैं। तुम ब्रह्मा हो, तुम विष्णु हो, तुम रुद्र हो, तुम इन्द्र हो, तुम अग्नि हो, तुम वायु हो, तुम सूर्य हो, तुम चंद्रमा हो, तुम ब्रह्म हो, भूः, भूवः, स्वः ये तीनों लोक तथा ॐकार वाच्य पर ब्रह्म भी तुम हो।

ॐ गणादि पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनंतरं । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितं ।  
तारेण ऋद्धं । एतत्तव मनुस्वरूपं । गकारः पूर्वरूपं । अकारो मध्यमरूपं ।  
अनुस्वारश्चान्तरूपं । बिन्दुरुत्तररूपं । नादः संधानं । सै हितसंधिः  
सैषा गणेश विद्या । गणकऋषिः निचृद्गायत्रीच्छंदः । गणपतिर्देवता ।  
ॐ गं गणपतये नमः ॥७॥

अर्थः गण के आदि अर्थात् 'गू' कर पहले उच्चारण करें । उसके बाद वर्णों के आदि अर्थात् 'अ' उच्चारण करें । उसके बाद अनुस्वार उच्चारित होता है । इस प्रकार अर्धचंद्र से सुशोभित 'गं' ॐकार से अवरुद्ध होने पर तुम्हारे बीज मंत्र का स्वरूप (ॐ गं) है । गकार इसका पूर्वरूप है । बिन्दु उत्तर रूप है । नाद संधान है । संहिता संविध है । ऐसी यह गणेश विद्या है । इस महामंत्र के गणक ऋषि हैं । निचृग्दाय छंद है श्री मद्महागणपति देवता हैं । वह महामंत्र है- ॐ गं गणपतये नमः ।

एकदंताय विद्महे । वक्रतुण्डाय धीमहि ।  
तन्नो दंती प्रचोदयात् ॥८॥

अर्थः एक दंत को हम जानते हैं । वक्रतुण्ड का हम ध्यान करते हैं । वह दन्ती (गजानन) हमें प्रेरणा प्रदान करें । यह गणेश गायत्री है ।

एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम् । रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं  
मूषकध्वजम् । रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् ।  
रक्तगंधाऽनुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपुजितम् ॥ भक्तानुकंपिनं देवं  
जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृते पुरुषात्परम् ।  
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥९॥

अर्थः एकदंत चतुर्भुज चारों हाथों में पाश, अंकुश, अभय और वरदान की मुद्रा धारण किए तथा मूषक चिह्न की ध्वजा लिए हुए, रक्तवर्ण लंबोदर वाले सूप जैसे बड़े-बड़े कानों वाले रक्त वस्त्रधारी शरीर पर रक्त चंदन का लेप किए हुए रक्तपुष्पों से भलिभाँति पूजित । भक्त पर अनुकम्पा करने वाले देवता, जगत के कारण अच्युत, सृष्टि के आदि में आविर्भूत प्रकृति और पुरुष से परे श्रीगणेशजी का जो नित्य ध्यान करता है, वह योगी सब योगियों में श्रेष्ठ है ।

नमो व्रातपतये । नमो गणपतये । नमः प्रमथपतये ।  
नमस्तेऽस्तु लंबोदरायैकदंताय । विघ्ननाशिने शिवसुताय ।  
श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ॥१०॥

अर्थ: व्रात (देव समूह) के नायक को नमस्कार । गणपति को नमस्कार ।  
प्रथमपति (शिवजी के गणों के अधिनायक) के लिए नमस्कार । लंबोदर  
को, एकदंत को, शिवजी के पुत्र को तथा श्रीवरदमूर्ति को नमस्कार-  
नमस्कार ॥१०॥

एतदथर्वशीर्ष योऽधीते । स ब्रह्मभूयाय कल्पते ।  
स सर्व विघ्नैर्न बाध्यते । स सर्वतः सुखमेधते ।  
स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते ॥११॥

अर्थ: यह अथर्वशीर्ष (अथर्ववेद का उपनिषद) है । इसका पाठ जो करता  
है, ब्रह्म को प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है । सब प्रकार के विघ्न  
उसके लिए बाधक नहीं होते । वह सब जगह सुख पाता है । वह पाँचों  
प्रकार के महान पातकों तथा उपपातकों से मुक्त हो जाता है ।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ।  
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ।  
सायंप्रातः प्रयुज्जानोऽपापो भवति ।  
सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति ।  
धर्मार्थकाममोक्षं च विंदति ॥१२॥

अर्थ: सायंकाल पाठ करने वाला दिन के पापों का नाश करता है ।  
प्रातःकाल पाठ करने वाला रात्रि के पापों का नाश करता है । जो प्रातः-  
सायं दोनों समय इस पाठ का प्रयोग करता है वह निष्पाप हो जाता है । वह  
सर्वत्र विघ्नों का नाश करता है । धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करता  
है ।

इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् ।  
यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति ।  
सहस्रावर्तनात् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् ॥13 ॥

अर्थ: इस अथर्वशीर्ष को जो शिष्य न हो उसे नहीं देना चाहिए। जो मोह के कारण देता है वह पातकी हो जाता है। सहस्र (हजार) बार पाठ करने से जिन-जिन कामों-कामनाओं का उच्चारण करता है, उनकी सिद्धि इसके द्वारा ही मनुष्य कर सकता है।

अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति  
चतुर्थ्यामनश्नन जपति स विद्यावान् भवति ।  
इत्यथर्वणवाक्यं । ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्  
न बिभेति कदाचनेति ॥14 ॥

अर्थ: इसके द्वारा जो गणपति को स्नान कराता है, वह वक्ता बन जाता है। जो चतुर्थी तिथि को उपवास करके जपता है वह विद्यावान् हो जाता है, यह अथर्व वाक्य है जो इस मंत्र के द्वारा तपश्चरण करना जानता है वह कदापि भय को प्राप्त नहीं होता।

यो दूर्वाकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति ।  
यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति स मेधावान् भवति ।  
यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छित फलमवाप्नोति ।  
यः साज्यसमिद्धिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते ॥15 ॥

अर्थ: जो दूर्वाकुर के द्वारा भगवान् गणपति का यजन करता है वह कुबेर के समान हो जाता है। जो लाजो (धानी-लाई) के द्वारा यजन करता है वह यशस्वी होता है, मेधावी होता है। जो सहस्र (हजार) लड्डुओं (मोदकों) द्वारा यजन करता है, वह वांछित फल को प्राप्त करता है। जो घृत के सहित समिधा से यजन करता है, वह सब कुछ प्राप्त करता है।

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति ।  
सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ  
वा जप्त्वा सिद्धमंत्रो भवति ।  
महाविघ्नात्प्रमुच्यते ।  
महादोषात्प्रमुच्यते ।  
महापापात् प्रमुच्यते ।  
स सर्वविद्भवति से सर्वविद्भवति ।  
य एवं वेद इत्युपनिषद् ॥ १६ ॥

अर्थ: आठ ब्राह्मणों को सम्यक रीति से ग्राह कराने पर सूर्य के समान तेजस्वी होता है। सूर्य ग्रहण में महानदी में या प्रतिमा के समीप जपने से मंत्र सिद्धि होती है। वह महाविघ्न से मुक्त हो जाता है। जो इस प्रकार जानता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है वह सर्वज्ञ हो जाता है।

# श्री गणेश जी आरती

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।  
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥  
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी ।  
माथे सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी ॥  
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।  
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥  
पान चढ़े फल चढ़े, और चढ़े मेवा ।  
लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा ॥  
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।  
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥  
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया ।  
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥  
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।  
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥  
'सूर' श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा ।  
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥  
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।  
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥  
दीनन की लाज रखो, शंभु सुतकारी ।  
कामना को पूर्ण करो, जाऊं बलिहारी ॥  
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।  
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥





Hi! We're InstaPDF. A dedicated portal where one can download any kind of PDF files for free, **with just a single click.**

<https://instapdf.in>

READ DISCLAIMER